International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 03-02-2019; Accepted: 07-03-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 3; May 2019; Page No. 07-09

असमिया साहित्य में रोमांटिसिज्म के लक्षण

दिगंत बोरा
शोधार्थी, हिंदी विभाग, राजीव गांधी विश्वविद्यालय, रोनो हिल्स, ईटानगर, अरुणाचल प्रदेश, भारत।

सारांश
हिंदी साहित्य की तरह असमिया साहित्य में भी अंग्रेजी साहित्य के प्रभाव से स्वच्छंदतावाद की धारा प्रवाहित हुई। पहले असमिया साहित्य में अंग्रेजी के 'रोमांटिक' (Romantic) के पर्याय के रूप में नवन्यासिक शब्द को अपनाया गया। बाद में महेंद्र बोरा ने 'रोमांटिक' और 'रोमांटिसिज्म' (Romanticism) के पर्याय के रूप में क्रमशः 'रमन्यास' और 'रमन्यासवाद' शब्दों को प्रयोग किया। असमिया साहित्य में नयी चेतना के प्रवाह में बांगला और अंग्रेजी साहित्य के नवजागरण की भूमिका को अनदेखी नहीं की जा सकती। रमन्यासवाद के प्रवर्तक त्रिमूर्तियाँ हैं- चंद्रकुमार अगरवाला, लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा और हेमचंद्र गोश्वामी। रोमांटिक साहित्य को किसी ने व्यक्तिवादी, तो किसी ने साहित्य का उदारीकरण, तो किसी ने भविष्य के रंगीन सपनों से जोड़ा। प्रकृति प्रेम, स्वदेशानुराग, प्रेमानुभूति, रहस्यवाद, कल्पना प्रवणता, सौंदर्यानुभूति, अतींद्रियवाद, आत्मविमुग्धता, मानवतावाद, चित्रात्मक भाषा आदि रमन्यासवाद की प्रधान प्रवृत्तियाँ हैं। रोमांटिक साहित्य का प्रभाव असमिया साहित्य पर 1889-1940 तक विशेष रूप से गीतिकाव्य पर दिखाई देता है। सॉनेटों, शोकगीतों, साहित्यिक लोकगीतों तथा व्यंगात्मक कविताएँ भी प्रचुरता से लिखी गयी। चंद्रकुमार अगरवाला की 'वनकुँवरी' को प्रथम रोमांटिक कविता का श्रेय मिला। इसके पश्चात असमिया साहित्य के सभी विधाओं में यह धारा चली।

मूल शब्द : रोमांटिक, रमन्यास, रमन्यासवाद, स्वच्छंदतावाद, नवन्यासिक, प्रकृति चित्रण, रहस्यात्मकता, व्यंगात्मकता आदि।

प्रस्तावना
रमन्यासवाद स्वच्छन्दतावाद का ही पर्याय है। हिंदी में इस शब्द का प्रयोग आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने श्रीधर पाठक को स्वच्छन्दतावाद का प्रवर्तक मानते हुए किया था। रोमांटिसिज्म शब्द की व्युत्पत्ति रोमांटिक विशेषण से हुई है, जिसके प्राचीन फ्रांसीसी भाषा में Romanz, Romance आदि रूप भी पाये जाते हैं। "प्राचीन रूप में Romanz या Romance शब्द का प्रयोग मध्ययुगीन कल्पना वृत्तिप्रधान स्वच्छन्द वृत्तिके परिचायक साहित्य के लिए हुआ था। इस प्रकार ।स्वच्छन्दतावाद मध्ययुगीन साहित्यिक प्रवृत्तियों का ही नवीन संस्करण है।"[1] विश्व साहित्य कोश के अनुसार 'रोमांटिक' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग 1654 ई. में हुआ था।[2] जिसका कोशगत अर्थ रोमांस के समान (Like a romance)। रोमांटिक शब्द को एक काव्य प्रवृत्ति या काव्य आंदोलन के रूप में सर्वप्रथम जर्मन आलोचक फ्रेडिक श्लेगल ने किया।[3] श्लेगल ने रोमांटिक शब्द का प्रयोग क्लासिसिज्म के विरोध में किया था। "एक साहित्यिक प्रवृत्ति के रूप में श्लेगल ने रोमांटिक को सर्वप्रथम परिभाषित की। तब से लेकर अबतक अनेक विद्वानों ने रोमांटिसिज्म की अनेक परिभाषाएँ दी हैं। जिनकी संख्या लुकास ने अपनी पुस्तक 'The Decline and Fall of the Romantic Idea' में ग्यारह हजार से भी ऊपर बताई हैं।"[4]

मूल विषय
असमिया साहित्य में रोमांटिक शब्द के पर्याय के रूप में 'नवन्यास', 'नवन्यासिक' शब्दों को अपनाया गया था। बाद में डॉ. महेंद्र बोरा ने सर्वप्रथम 'रोमांटिक' के पर्याय के रूप में 'रमन्यास' और 'रोमांटिसिज्म' के पर्याय के रूप में 'रमन्यासवाद' शब्द को प्रयोग में लाया।

रोमांटिक साहित्य की समालोचना करते हुए अनेक विद्वानों ने अनेक मत दिए हैं। किसी ने इसमें व्यक्तिवादी चेतना का विकास देखा, तो किसी ने साहित्य का उदारीकरन से जोड़ा, कोई वास्तविकता मुख मोड़ने और भविष्य की रंगीन कल्पना से जोड़ा। असमिया साहित्य में इस परिवर्तन के पीछे अंग्रेजी साहित्य एवं यूरोपीय आंदोलन के साथ-साथ इससे प्रभावित बंगला साहित्य का भी प्रभाव पड़ा। असमिया साहित्य में रोमांटिसिज्म के प्रवर्तक त्रिमूर्तियाँ हैं- चंद्रकुमार अगरवाला।, लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा और हेमचंद्र गोस्वामी। चंद्रकुमार अगरवाला की 'वनकुँवरी' को प्रथम रोमांटिक कविता का श्रेय मिला। इसके बाद ही कविता, नाटक, लघुकथा, उपन्यास आदि साहित्य की अन्य विधाओं में भी यह धारा देखने को मिलती हैं।

रमन्यासवाद के प्रभाव के कारण असमिया साहित्य में बहुत सारे परिवर्तन दिखाई देती हैं। पुरानी शास्त्रीयता का विरोध करते हुए स्वच्छंदता को महत्व दिया गया। नये नये विषयों तथा विधाओं में साहित्य रचना होने लगे। डॉ. सत्येंद्रनाथ शर्मा ने रोमांटिक, जिसे वे रमन्यास कहते हैं, की विशेषताओं के बारे में बताते हुए लिखते है- "कविहकले आपोनमनर माधुरी हानि, कल्पनार सौरभ ढालि,आवेगर मादकता सिंचि कविताक सहृदय संवादी करि तोला नतुन काव्यनीति रमन्यासर प्रधान वैशिष्ट्य।"[5]

स्वच्छंदता के कारण रोमांटिक कविता व्यक्तिसत्ता का प्रधानता, कल्पना प्रवणता, रूप सौंदर्य के अंवेषण पर टिक गई। सॉनेट, शोकगीत, लम्बी इतिवृत्तात्मक कविता, साहित्यिक लोकगीत, व्यंगात्मक कविता आदि भी प्रचुर से लिखी गई। जीवन के प्रति नवीन मूल्यबोध तथाप्राचीन काल में अवहेलित लघुतम वस्तुओं को भी काव्य का विषय बनाया गया।

रमन्यासवाद के प्रवर्तक त्रिमूर्तियाँ हैं- चंद्रकुमार अगरवाला, लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा और हेमचंद्र गोस्वामी। इन कवियों के अतिरिक्त अन्य प्रमुख कवि हैं- नलिनीवाला देवी, अम्बिकागिरि राय चौधरी, पद्मनाथ गोहाञि बरुवा, हितेश्वर बरबरुवा, रजनीकांत बरदलै, रघुनाथ चौधरी, नीलमणि फुकन, जतींद्रनाथ दुवरा आदि। रोमांटिक कवियों के प्रमुख साहित्यिक कृति हैं- चंद्रकुमार अगरवाला कृत 'प्रतिमा', और 'बीनबरागी', हेमचंद्र गोस्वामी कृत 'फुलर चाकि', पद्मनाथ गोहाञि कृत 'जुरणि', हितेश्वर बरवरुवा कृत 'तलसरा

फुलर आजलि' और 'ढोपाकलि', रघुनाथ चौधरी कृत 'सादरी', 'केतेकी', 'दहिकतरा' आदि। इन कृतियों के माध्यम से असमिया कविता में रोमांटिक काव्य धारा देखने को मिलती है।

असमिया साहित्य में रोमांटिक काव्य धारा के प्रभाव को निम्नलिखित रूपों में देख सकते हैं:

1. प्रकृति चित्रण

नवशात्रवादी कवि प्रकृति के नाम पर मानव प्रकृति का चित्रण में ही तल्लीन रहे। इससे आगे वे कुछ लिख सके तो नागरिक प्रकृति का विवरणदे सके। उनके लिए प्रकृति सुव्यवस्थित था। परंतु स्वच्छन्दतावादी कवियों ने प्रकृति-प्रंगण में मुक्त विहार किया है। स्वच्छन्दतावादी कवि का प्रकृति चित्रण वैयक्तिक है। वे प्रकृति के उन्हीं अववयों को चुनते है, जो उनकी आत्मानुभूति को स्पष्ट करने में सहायक है। यदि वे क्षुब्ध है तो प्रकृति भी क्षुब्ध रूप में चित्रित हुए है। इन कवियों ने प्रकृति चित्रण में सूक्ष्म, संश्लिष्ट और नूतन उद्भावनाएँ की हैं। प्रकृति का मानवीकरण भी यहाँ मिलता है। चंद्रकुमार आगरवाला, रघुनाथ चौधारी की प्रकृतिमूलक कविताओं में प्रकृति के साथ मानव हृदय की समानता का भाव आते है। चंद्रकुमार आगरवाला की 'नियर', 'प्रकृति', 'तेजीमला' आदि कविता में प्रकृति निखर उठी है-

"फुलनित कोने निशा नाशिशिल
सिगि रै गल मणि
रंगिनीर भाव हाँहि नासोनर
र 'ल सिल एई कनि" (नियर)

अर्थात कवि कह रहे है कि बगीचे में रात को कौन नृत्य कर रही थी । जिसके नृत्य के ताल में समुचे संसार मोहित हो गयी थी ।

2. सौंदर्य प्रेम

साहित्य सौंदर्य प्रेम का आना कोई नई बात नहीं है। प्राचीन काल से ही साहित्य में सौंदर्य चित्रण की प्रमुखता रही है। सत्यं, शिवं, सुंदरम् के महामंत्र में सुंदरम् इसी बात की पुष्टि करता है कि सुंदरता, सौंदर्य प्रेम अति प्रचीन काल से होता आया है। पर रोमांटिक कविता में सुंदरता को जीवन का खेल बताया गया है। सौंदर्य चेतना को नये रूप में स्थापित किया गया है। चंद्रकुमार आगरवाला की कविता 'माधुरी', 'सौंदर्य' आदि में सुंदरता जीवन के मूलभूत तत्व के रूप में चित्रित हुआ है-

"फुरिछो यात्रीर देशे-विदेशे
सौंदर्य आभास जते पाओ एकनिका
सुंदरर आराधना जीवनर खेल
अभिनय अंते घोर काल जवनिका" (सौंदर्य)

3. प्रेमानुभूति

रोमांटिक कविता में प्रेम का प्रकाश शरीर के साथ-साथ जीव जगत से भी जुड़ा लगता है। स्वदेश प्रेम, मानवता से प्रेम, नर-नारी के प्रेम आदि रूपों में प्रेम की चेतना का प्रसार मिलता है। लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा ने प्रेम की प्रकाश को सर्वत्र देखा था, अनुभूत किया था-

"प्रेमत घुरिशे भूमंडल
प्रेमत फुलिशे शतदल"

4. स्वदेश प्रेम

रोमांटिक युग के अधिकांश कवियों की रचनाओं में देशप्रेम की भावना मिलती है। ऐतिहासिक पात्रों को आधार बनाकर कवियों ने अपने जातीयता के भाव को प्रकाश किया है। नलिनीवाला देवी, अम्बिकागिरी राय चौधरी देशप्रेम की भावना सुंदरता के साथ आया है। नलिनीवाला देवी की कविता जनमभूमि में कवयित्री की देश के प्रति अकृतिम प्रेम और आंतरिकता का भाव देखने को मिलता है

"दुखीयार भगा पजाँ एकोखनि तीर्थ तात
एकोखनि पुण्य आश्रम
मरिले पुनर आहि दुखिया देशते मोर
लउ जेन पुनर जनम। "(जनमभूमि)

5. अलौकिकता

अलौकिकता रोमांटिक कविता का एक प्रधान प्रवृत्ति है। रोमांटिक कविता में इस लौकिक जगत के अलावा भी अन्य एक अलौकिक जगत है जहाँ पर तेजीमला, बनकुँवरी, जलकुँवरी जैसे चरित्र जीवित है। इन चरित्र के माध्यम से जीवन की एक नए मादकता दिखती है। ये चरित्र मानवीय चरित्र नहीं है। तेजीमला में तेजिमला अपने पिता से कहती है-

"हातो नेमेलिबि फुलो निशिंगिबि
करे नावरीया तइ
मानुहे फुलर कि जाने आदर
तेजीमला हे मइ" (तेजीमला)

6. रहस्यानुभूति

जीव, जगत और ईश्वर इन तीनों में केवल ईश्वर ही अनुभव मात्र है। आदिम युग से ही मनुष्य ईश्वरीय शक्ति संधान में लगा है। इस शक्ति के हम जितने ही करीव जाते है यह शक्ति उतने ही रहस्यमय लगते है। इंद्रियों से परे होने पर भी इसको प्राप्त करना संभव है। चंद्रकुमार अगरवाला, नलिनीवाला देवी, अम्बिकागिरी राय चौधरी की कविता में उस परम सत्ता से मिलने की वासना, इच्छा मिलती है। अम्बिकागिरी रायचौधरी उसे 'तुमि कि विराट, कि विशाल महानील सीमाहीन शुन्य' कहकर उसकी विशालता का वर्णन किया है। है। नलिनीवाला देवी ने चिताग्नि के माध्यम से उस परम शक्ति से मिलने की इच्छा व्यक्त की है। यहाँ प्रेम का चित्रण आध्यात्मिक रूप में हुआ है।

"चिताग्नि होमाग्नि हब
समीरण मलय चंदन
सिदिना सार्थक हब
पूर्ण अर्घ पूर्ण इ जीवन"

7. मानवतावाद

रोमांटिक कवियों का राष्ट्रप्रेम मानवतावादी आधारभूमि पर अधिष्ठित है। रोमांटिक कवि का देश प्रेम देश के निवासी, देश के लोक जीवन का प्रेम है। जो मानवतावादी भाव आप्लावित है। रोमांटिक कवि सच्चे अर्थों में मानवतावादी थे, क्योंकि उनकी सहानुभूति का पात्र सामान्य मानव था। रोमांटिक कवि मानव की पूजा को सर्वश्रेष्ठ मानते है। उनके अनुसार मानव पूजा के द्वारा ही ईश्वर की प्राप्ति संभव है। चंद्रकुमार अगरवाला की 'मानव वंदना', 'तेजीमला' आदि कविताओं में मानवतावाद का स्पष्ट प्रकाश दिखाई देती है-

"मानुहे देव मानुहे सेव
मानुह बिने नाइ केव
करा करा पूजा पाद्य अर्घ लै
जय जय मानव देव" (मानव वंदना)

8. कल्पना विलास

नवशास्त्रवादी कवि विवेक अथवा सदबुद्धि को काव्य के लिए अनिवार्य तत्व मानते है। परंतु रोमांटिक कवि कल्पना के स्वच्छंद प्रवाह में विश्वास करता है। कल्पना को अतिशय महत्व दिए जाने के कारण रोमांटिक कवि प्रकृति में ईश्वर की सत्ता का अनुभव करने लगता है। कल्पना ने ही उन्हें रहस्यवादी बना दिया है। कल्पना के कारण अलौकिक जगत की कल्पना कर तेजीमला जैसी महत्व चरित्र को सृष्टि कर पायी।

9. भावातिरेक अथवा भावप्रवणता

कल्पनाशीलता और भावप्रवणता एक दोसरे से सम्पृक्त हैं। रोमांटिक कवियों ने स्वच्छन्द भावाभिव्यंजना, भावुकता तथा भावों के सहज उच्छलन पर बल दिया। उनकी अधिकांश कविता भावों स्वतः सहज उच्छलन ही है।

10. विद्रोही दृष्टिकोण

रोमांटिक कविता का जन्म प्राचीन साहित्यिक परंपराओं, काव्यगत रीतिबद्धता और शास्त्रीय नियमों के विरुद्ध हुआ था, इसलिए इन कवियों ने विद्रोह का स्वर अपना लिया था। विषयवस्तु के क्षेत्र में वे अभिजात्यवादी विषयों के स्थान पर सामान्य विषयों को ही वरीयता देते हैं। उनके लिए कथावस्तु का उदात्त होना आवश्यक नहीं है। वे साधारण से साधारण वस्तु को भी अपने काव्य का विषय बनाने का पक्षपाती थे। भाषा-शैली के संबंध में भी वे प्राचीन शास्त्रीय नियमों का विरोध करते है। रोमांटिक कवि प्रतीकों, बिम्बों आदि संबंधित प्राचीन परंपराओं को भी नकारते है। इसी कारण रोमांटिक कवि प्रतीकों, बिम्बों आदि के द्वारा अपने कल्पना लोक की सृष्टि करते है।

11. वेदना एवं निराशा का चित्रण

वेदना एवं निराशा का चित्रण रोमांतिक कविता का एक प्रधान उपलब्धि है। इसी के कारण रमन्यासवादी कवियों ने भी अपने काव्य में वेदना एवं निराशा का चित्रण किया है। वेदना की गहराई ने उनकी भावनाओं को तीव्रतर रूप दिया है, वही उनकी कविताओं में माधुर्य रस भी भरा है। प्रेम की अग्नि में अंतर्मन का आभास यतींद्रनाथ दुवरा के इस कविता में देखा जा सकता है-

"मोर एई हृदयखनि, जेतुका पातर दरे
सेउजीय वननिर वरनेरे ढका
अंतर ज्वलोवा छवि अतीतर स्मृति लई
वुकुर तेजेरे आशे अंतेरे अँका।"

यतींद्रनाथ दुवरा के बारे में महेश्वर नेउग लिखते है कि – "प्रेमसर्वस्व जीवनत प्रेम हेरुवाई कविये जीवनत निजर परिचय शून्य रुपे हे देखा पाईसे। सई शून्यतार भयावहतार परा रक्षा पावलै तेउँ विसारिसे विस्मरण आवरण। अनुभूतिर सूक्ष्म तीव्रता आरु प्रकाशर गीतधर्मिताई दुवरार लिरिक रुपत चरम उत्कर्ष दान करिशे।"[6]

12. जातीय चेतना के साथ साथ असमिया संस्कृति तथा साहित्य को लेकर सचेतन भाव प्रकाश किया गया।

13. बेजबरुवा तथा शरत गोस्वामी के साहित्य में ग्राम्य जीवन से जुड़ी छोटी-छोटी कहानियों में भी पाठकों को एक नये स्वाद मिला।

उपरोक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि असमिया साहित्य में रमन्यासवाद के प्रभाव के कारण बहुत सारी परिवर्तन दिखाई देती हैं। असमिया साहित्य में रोमांटिक काव्यधारा का प्रारम्भ हिंदी से पहले होते है। प्राचीन परंपराओं के विरोद्ध करते हुए नये कवियों ने काव्य के लिए विवेक को आवश्यक न मानते हुए कल्पनाशीलता और भावप्रवणता पर जोड़ देते है। सूक्ष्म-सूक्ष्म वस्तु को भी काव्य विषय के लिए उपयुक्त मानते हैं। प्रकृति चित्रण इससे पहले भी काव्य का विषय रहा है परंतु रमन्यासवादी कवि प्रकृति का स्वच्छंद चित्रण करते है। असमिया साहित्य में चंद्रकुमार अगरवाला कृत 'वनकुँवरी' से रोमांटिक काव्यधारा प्रारम्भ होता है। इसके साथ ही रमन्यासवाद के प्रभाव से असमिया समाज और साहित्य में बहुत सारे परिवर्तन दिखाई दिये। असमिया नवजागरण के पीछे अंग्रेजी और बंगाली नवजागरण के महत्व को नकारा नहीं जा सकता। जोनाकी पत्रिका ने असमिया भाषा और साहित्य में वही कार्य किया जो हिंदी साहित्य और भाषा के विकास में सरस्वाती पत्रिका ने किया था। रमन्यासवाद के प्रभाव के कारण असमिया साहित्य में नयी चेतना के प्रसार के साथ-साथ बहुत सारी परिवर्तन दिखाई देती हैं.

संदर्भ सूची

1. पाश्चात्य काव्यशास्त्र : अधुनातन संदर्भ, सत्यदेव मिश्र, पृष्ठ- 318
2. वही, पृष्ठ- 318
3. वही, पृष्ठ – 318
4. वही, पृष्ठ – 318
5. पाश्चात्य काव्यशास्त्र : अधुनातन संदर्भ, सत्यदेव मिश्र, पृष्ठ- 321
6. हिंदी साहित्य का परिचयात्मक इतिहास, अलख निरंजन सहाय, पृष्ठ- 170 असमिया साहित्यर रूपरेखा, डॉ. महेश्वर नेउग, पृष्ठ- 266.